इस्लाम में मरयिम (3 का भाग 3)

रेटिंग:

विवरण: 3 :

श्रेणी: लेख तुलनात्मक धर्म मरयम

द्वारा: M. Abdulsalam (© 2006 IslamReligion.com)

पर प्रकाशित: 04 Nov 2021

अंतिम बार संशोधित: 04 Nov 2021

यीशु का जन्म

प्रसव की शुरुआत में, वह मानसिक और शारीरिक रूप से अत्यधिक दर्द में थी। ऐसी धर्मपरायण और कुलीन महिला बिना विवाह के बच्चे को कैसे जन्म दे सकती है? हमें यहां यह बताना चाहते हैं कि मरयम की गर्भावस्था सामान्य थी। जो अन्य महिलाओं के जैसे ही थी, और दूसरों की तरह अपने बच्चे को जन्म दिया। ईसाई विश्वास के अनुसार, मरयम को प्रसव का दर्द नहीं हुआ था, क्योंकि ईसाई धर्म और यहूदी धर्म मासिक धर्म और प्रसव को हव्वा के पाप के लिए महिलाओं पर एक अभिशाप मानते हैं।[1] इस्लाम ना तो इसका समर्थन करता है, और ना ही 'मूल पाप' के सिद्धांत को, बल्कि इस बात पर जोर देता है कि कोई भी दूसरों के पाप का बोझ नहीं उठाता:

"... कोई भी कुकर्म करेगा, तो उसका भार उसी के ऊपर होगा और कोई किसी दूसरे का बोझ नहीं उठायेगा..." (क़ुरआन 6:164)

इसके अलावा, ना तो क़ुरआन और ना ही पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की दया और कृपा उन पर बनी रहे) ने कभी उल्लेख किया कि वह हव्वा ही थी जिसने पेड़ से फल खाया और आदम को लुभाया। बल्कि, क़ुरआन दोष या तो सिर्फ आदम पर डालता है, या उन दोनों पर:

"तो शैतान ने दोनों को संशय में डाल दिया... तो उन दोनों को धोखे से रिझा लिया। फिर जब दोनों ने उस वृक्ष का स्वाद लिया, तो उनके लिए उनके गुप्तांग खुल गये" (क़ुरआन 7:20-22)

मरयिम ने अपनी पीड़ा और दर्द के कारण कामना की कि वह कभी पैदा ही नहीं हुई होती, और कहा:

"क्या ही अच्छा होता, मैं इससे पहले ही मर जाती और भूली-बसिरी हो जाती।" (क़ुरआन 19:23)

बच्चे को जन्म देने के बाद, और जब उसकी पीड़ा और अधिक गंभीर नहीं हो सकती थी, नवजात शिशु, यीशु (ईश्वर की दया और आशीर्वाद उन पर हो) उसके नीचे से चमत्कारिक रूप से चिल्लाया, उसे खुश किया और उसे आश्वस्त किया कि ईश्वर उसकी रक्षा करेगा:

"तो उसके नीचे से पुकारा कि उदासीन न हो, तेरे पालनहार ने तेरे नीचे एक स्रोत बहा दिया है। और हिला दे अपनी ओर खजूर के तने को, तुझपर गिरायेगा वह ताज़ी पकी खजूरें। अतः, खा, पी तथा आँख ठण्डी कर। फिर यदि किसी पुरुष को देखे, तो कह देः वास्तव में, मैंने मनौती मान रखी है, अत्यंत कृपाशील के लिए व्रत की। अतः, मैं आज किसी मनुष्य से बात नहीं करूँगी।" (क़ुरआन 19:24-26)

मरयम ने आश्वस्त महसूस किया। यह यीशु के हाथों किया गया पहला चमत्कार था। उसने अपनी माँ से उसके जन्म पर आश्वस्त होकर बात की, और एक बार फिर जब लोगों ने उसे अपने नवजात शिशु को ले जाते देखा। जब उन्होंने उसे देखा, तो उन्होंने उस पर यह कहते हुए आरोप लगाया:

"सबने कहाः हे मरयम! तूने बहुत बुरा किया..." (क़ुरआन 19:27)

उसने केवल यीशु की ओर इशारा किया, और उसने चमत्कारिक ढंग से बात की, जैसा कि ईश्वर ने घोषणा पर उससे वादा किया था।

"वह पालने में और पुरुषत्व में रहते हुए लोगों से बातें करेगा, और वह धर्मियों में से एक होगा।" (क़ुरआन 3:46)

यीशु ने लोगों से कहा:

"मैं ईश्वर का भक्त हूँ। उसने मुझे पुस्तक (इन्जील) दी है तथा मुझे पैगंबर बनाया है। तथा मुझे शुभ बनाया है, जहाँ रहूँ और मुझे आदेश दिया है प्रार्थना तथा दान का, जब तक जीवित रहूँ। तथा अपनी माँ का सेवक (बनाया है) और उसने मुझे क्रूर तथा अभागा नहीं बनाया है। तथा शान्ति है मुझपर, जिस दिन मैंने जन्म लिया, जिस दिन मरूँगा और जिस दिन पुनः जीवित किया जाऊँगा।" (क़ुरआन 19:30-33)

यहाँ से यीशु का प्रकरण शुरू होता है, लोगों को ईश्वर की आराधना के लिए बुलाने का उनका आजीवन संघर्ष, उन यहूदियों की साजिशों और योजनाओं से बचना जो उन्हें मारने का प्रयास करेंगे।

इस्लाम में मरयिम

हम पहले ही उस महान स्थिति पर चर्चा कर चुके हैं, जो इस्लाम मरयिम को देता है। इस्लाम उन्हें बनाई गई महिलाओं में सबसे उत्तम होने का दर्जा देता है। क़ुरआन में, मरयिम से ज्यादा किसी औरत को तवज्जो नहीं दी गई, भले ही आदम को छोड़कर सभी पैगंबरो की मांएं थीं। क़ुरआन के 114 अध्यायों में से, वह उन आठ लोगों में से है जिनके नाम पर एक अध्याय है, उन्नीसवां अध्याय "मरयिम", जो अरबी में मैरी है। क़ुरआन के तीसरे अध्याय का नाम उनके पिता इमरान (हेली) के नाम पर रखा गया है। अध्याय मरयिम और इमरान क़ुरआन के सबसे खूबसूरत अध्यायों में से हैं। इसके अलावा, मरयम एकमात्र महिला हैं जिन्हें विशेष रूप से क़ुरआन में नामित किया गया है। पैगंबर मुहम्मद ने कहा:

"दुनिया की सबसे अच्छी महिलाएं चार हैं: मैरी (मरयिम) हेली की बेटी, आसिया फिरौन की पत्नी, खदीजा बिन्त खुवेलिद (पैगंबर मुहम्मद की पत्नी), और फातिमा, ईश्वर के दूत मुहम्मद की बेटी।" (अल-तिर्मिज़ी)

इन सभी गुणों के बावजूद, जिनका हमने उल्लेख किया है, मरयम और उनके पुत्र यीशु केवल मानव थे, और उनमें कोई विशिषता नहीं थी जो मानवता के दायरे से परे थी। वे दोनों सृजित प्राणी थे और दोनों का "जन्म" इस संसार में हुआ था। यद्यपि वे गंभीर पाप करने से बचने के लिए ईश्वर की विशेष देखभाल के अधीन थे (यीशु के मामले में पूरी सुरक्षा अन्य पैगंबरो की तरह, और मैरी के मामले में अन्य धर्मी व्यक्तियों की तरह आंशिक सुरक्षा, अगर हम यह माने कि वह एक पैगंबर नहीं थी तो), वे अभी भी गलतियाँ करने के लिए प्रवृत्त थे। ईसाई धर्म के विपरीत, जो मरयम को दोषरहित[2] मानता है, ईश्वर के सिवा कोई भी पूर्ण नहीं है।

इस्लाम सख्त एकेश्वरवाद के विश्वास और कार्यान्वयन की आज्ञा देता है; कि ईश्वर के अलावा किसी के पास कोई अलौकिक शक्ति नहीं है, और सिर्फ ईश्वर ही पूजा, भक्ति और आराधना के योग्य है। भले ही पैगंबरो और धर्मी लोगों ने अपने जीवनकाल में चमत्कार किये हैं, लेकिन उनके पास अपनी मृत्यु के बाद खुद की मदद करने की कोई शक्ति नहीं है, दूसरों की तो बात ही छोड़ दीजिये। सभी मनुष्य ईश्वर के दास हैं और उन्हें ईश्वर की सहायता और दया की आवश्यकता है।

मरयम के लिए भी ऐसा ही है। हालाँकि उनकी उपस्थिति में कई चमत्कार हुए, लेकिन उनकी मृत्यु के बाद यह सब बंद हो गया। कई लोगों ने दावा किया कि उन्होंने मरयम की आत्मा को देखा है, या लोग उसका आह्वान करने के बाद नुकसान से बच गए जैसा कि "ट्रांजिटस मारिया" जैसे अपोक्रिफ़िल साहित्य में उल्लेख किया गया है, लेकिन ये सब सिर्फ लोगों को एक सच्चे ईश्वर की आराधना और भक्ति से दूर करने के लिए शैतान द्वारा किया गया एक दिखावा है। 'द हयलि मैरी' जैसी भक्ति ने माला

और आवर्धन के अन्य कृत्यों की बड़ाई की, जैसे कि चर्चों की भक्ति और मैरी को आनंदित करने की विशिष्टता, सभी लोगों को ईश्वर के अलावा दूसरों की महिमा और गुणगान करने के लिए प्रेरित करते हैं। इन कारणों के कारण, इस्लाम ने किसी भी प्रकार के नवाचारों के साथ-साथ कब्रों पर पूजा स्थलों का निर्माण, सभी को ईश्वर द्वारा भेजे गए सभी धर्मों के सार को संरक्षित करने के लिए, केवल उसी की आराधना करने और उसके अलावा अन्य सभी की झूठी पूजा को छोड़ने के प्राचीन संदेश की सख्त मनाही की है।

मरयम ईश्वर की दासी थी, और वह सभी महिलाओं में सबसे शुद्ध थी, विशेष रूप से यीशु के चमत्कारी जन्म को सहन करने के लिए चुनी गई थी, जो सभी महान पैगंबरो में से एक थे। वह अपनी धार्मिकता और पवित्रता के लिए जानी जाती थीं, और आने वाले युगों में उन्हें यही महान सम्मान दिया जाता रहेगा। उसकी कहानी पैगंबर मुहम्मद के आने के बाद से गौरवशाली क़ुरआन में बताई गई है, और न्याय के दिन तक अपनी मूल स्थिति में अपरिवर्तित रहेगी।

फुटनोट:

[1] उत्पत्ति (3:16) देखें

[2] सेंट ऑगस्टीन: "डे नैट. एट ग्रटसि", 36

इस लेख का वेब पता:

https://www.islamreligion.com/index.php/hi/articles/23

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2023 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।